इतने ढेर बच्चे सिवाय बेहद के बाप के और कोई कै हो नही सकते। यह संगम युग का पटि ही सुहावना है। इस संगम पर ही सब पुरुषोतम बनते है। सभी मनुष्य मात्र तथा सभी जीव जन्तु जो भी रचना है वो कब दुःरव नही देती। तुमसे यह प्रश्न पूछते है कि वहाँ यह जानवर बीछू, गधे आद नही होंगी क्योंकि मनुष्य ही ऐसे नही होंगी तो जानवर ऐसे कैसे होंगे? वहाँ दुख की कोई बात नही। बाप है ही दुःरव हरता सुख करता। सुख का वर्सा देते है। वहाँ यह बात नही पूछते कि हमने प्रारब्ध किससे पाई है। इस समय सब बच्चे यह पढ़ते हो। यहा है बेहद का पुरुषार्थ और प्रारब्ध। वो हद का पुरुषार्थ करते है तो हदकी ही प्रारब्ध बनती है। बेहद का बाप आते है तो सबकी प्रारब्ध सतोप्रधान बनाते है। जो फिर पटि बजाती तमोप्रधान बनती है। फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते है। कोई पुरुषार्थ करते-2 हट जाते है। फिर पुरुषार्थ करते है। यह अवस्था मे घटा बाधा होता ही है। इस समय कु तुम्हारे पुरुषार्थ ही भविष्य की प्रारब्ध बनती है। बहुत अच्छी प्रारब्ध मिलेगी बाप को फालो करने से अच्छा मददगार बनेंगे सर्विस करेंगे। मुख्य है याद। याद मे ही कष्ट है। क्यों कि आधा कल्प देह अभिमानी बने है। अब देही अभिमानी बनना है। इसमे ही मेहनत है। पावन बनना है। नालेज तो सहज है। बाप को याद करना भी कोई मुश्किल बात नही है। परन्तु याद मे माया विघ्न डालती है। नही तो बाप को छोड़े ही नही। पढ़ै भी जोर शोर से। क्यों कि जानते है कि बड़ी भारी कमाई है जन्म जन्मान्तर के लिये कल्प-कल्पान्तर के लिये। वर्सा बड़ा भारी है। सब तो विश्व के मालिक नही बनेंगे ना। चित्रों का ऐग्जीविशन तो बहुत होती है। परन्तु वो है बैध नाट अनैनी। बायोग्राफी कोई की जानते ही नही है। तुम हर एक की बायोग्राफी को जानते हो। पुराने चित्रों का विलायत मे बहुत रिगार्ड है। वास्तव मे रिगार्ड होना ही चाहिये एक का। जिस ही बाप को सभी याद करते है। सबसे जास्ती दाम वाली चीज वो ही है जैसे बाप स्वुद हीरे जैसा है तो बच्चे को भी हीरे ही जैसा बनाते है। तो उनका फरमान मानना चाहिये ना। वो कहते है कि फलानी जगह जाओ तो कहते है वहाँ गर्मी लगेगी। यह होगा। और तुमको मत पर चलना है। बहाना देना है क्या? बाबा समझ जाते है कि तकदीर बड़ा नही है। श्रीमत श्रेष्ट है ना कहीं भी भेजे। सर्विस के लिये भी जाते है तो भी समझ जाते है कि श्रीमत पर नही चले है। तो इनको कहा ही जाता है नां फरमान बरदारी। सो भी भगवान के का फरमान नही मानते है। फरमानबरदार बनने से ही ऊंच पद पा सकते है। ना फरमानबरदारी बनने से क्या हाल होगा? दैवी गुण धारन करने है। नही तो बहुत सजा होगी। ओम

6-3-67 रात्री क्लासः—महिमा करते है शिव बाबा की। क्यों कि ऊच ते ऊच वो ही है। सारी दुनियाँ तो ग्लानी करती है। हम भी ग्लानी करते थे नां सर्वव्यापी समझ कर। अब पहचान कर उनकी महिमा करते है। बाप जब भारत मे आते है तो भारत को वर्सा देते है। शिव जयन्ति का अर्थ ही है कि बाप की जयन्ती। अर्थात अपने वर्से की जयन्ति। बाप की जयन्ति तो जरूर बच्चों की भी जयन्ती। जयन्ती मनाने वाले सब बच्चे ही ठहरे नां। भारतवासियों ने तो क्या परन्तु सबको मनानी चाहिये। शिवलिंग को तो सभी मानते है। तुम अभी समझते हो सबको बाप ने आकर वर्सा दिया है। सतयुग मे है सुख धाम बाकी सब शान्ती धाम मे है। अब तुमको समझाया जाता है कि अपने को शरीर से अलग समझो। मुझे याद करो। शिव नाम को भी जानते है। तुम जानते हो वो तो नां ही लिंग है नां ही तत्व है। वो तो बिन्दी है। सिर्फ पूजा के ही लिये बड़ा बनाते है। शिव जयन्ती पर प्रदर्शनी मे बताना चाहिये कि शिव बाबा है ही सबका बाप। हम है सालीग्राम। तो जरूर बाप हमको स्वर्ग का वर्सा देते होंगे। बाप को याद करो तो पावन बन कर पावन दुनियाँ का मालिक बन जावेंगे। शिव बाबा ने भारत को स्वराज्य दिया था फिर जन्म लेते-2 पतित बन गये है। अब समय बहुत कम है। शिव बाबा कल्प-2 आकर राजयोग सिखलाते है। कहते है शरीर के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। सबको वानप्रस्थ अवस्था है। अब भक्ति मार्ग मुर्दाबाद ज्ञान मार्ग जिन्दाबाद होता है। शिव बाबा ही स्वर्ग स्थापन करने वाले है। संगम पर ही राजयोग सिखलाते है। बच्चों को यह फुरना लगा हुआ है। तुम ब्राह्मण कहते है हम अपने दैवी राजधानी स्थापन कर रहे है। ओम